रविवार 7 मार्च, 2021

विषय — आदमी

स्वर्ण पाठः 1 **कुरिन्थियों** 15 : 57

"परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमें जयवन्त करता है।"

उत्तरदायी अध्ययन: **2 कुरिन्थियों 4: 8, 9**
रोमियो 8: 31, 35, 37-39

8 हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरूपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते।
9 सताए तो जाते हैं; पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते।
31 सो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?
35 कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार?
37 परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।
38 क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई,
39 न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. **नीतिवचन 11: 3 (*से*:)**

3 सीधे लोग अपनी खराई से अगुवाई पाते हैं।

2. **फिलिप्पियों 2 : 14, 15**

14 सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

15 ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहो, जिन के बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों की नाईं दिखाई देते हो।

3. फिलिप्पियों 4 : 11 (इसलिये)-13

11 … क्योंकि मैं ने यह सीखा है कि जिस दशा में हूं, उसी में सन्तोष करूं।
12 मैं दीन होना भी जानता हूं और बढ़ना भी जानता हूं: हर एक बात और सब दशाओं में तृप्त होना, भूखा रहना, और बढ़ना-घटना सीखा है।
13 जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं।

4. उत्पत्ति 37: 2 (यूसुफ) (*से*;), 3, 4, 24 (*से*:), 28 (*से*:)

2 यूसुफ सतरह वर्ष का हो कर भाइयों के संग भेड़-बकरियों को चराता था।
3 और इस्राएल अपने सब पुत्रों से बढ़के यूसुफ से प्रीति रखता था, क्योंकि वह उसके बुढ़ापे का पुत्र था: और उसने उसके लिये रंग बिरंगा अंगरखा बनवाया।
4 सो जब उसके भाईयों ने देखा, कि हमारा पिता हम सब भाइयों से अधिक उसी से प्रीति रखता है, तब वे उससे बैर करने लगे और उसके साथ ठीक तौर से बात भी नहीं करते थे।
24 और यूसुफ को उठा कर गड़हे में डाल दिया: वह गड़हा तो सूखा था और उस में कुछ जल न था।
28 सो यूसुफ के भाइयों ने उसको उस गड़हे में से खींच के बाहर निकाला, और इश्माएलियों के हाथ चांदी के बीस टुकड़ों में बेच दिया।

5. उत्पत्ति 39 : 1, 3, 7, 8 (*से 1st* ,), 12, 19 (जब)-20 (*से 2nd* ,), 21, 22

1 जब यूसुफ मिस्र में पहुंचाया गया, तब पोतीपर नाम एक मिस्री, जो फिरौन का हाकिम, और जल्लादों का प्रधान था, उसने उसको इश्माएलियों के हाथ, से जो उसे वहां ले गए थे, मोल लिया।
3 और यूसुफ के स्वामी ने देखा, कि यहोवा उसके संग रहता है, और जो काम वह करता है उसको यहोवा उसके हाथ से सफल कर देता है।
7 इन बातों के पश्चात ऐसा हुआ, कि उसके स्वामी की पत्नी ने यूसुफ की ओर आंख लगाई; और कहा, मेरे साथ सो।
8 पर उसने अस्वीकार।
12 तब उस स्त्री ने उसका वस्त्र पकड़कर कहा, मेरे साथ सो, पर वह अपना वस्त्र उसके हाथ में छोड़कर भागा, और बाहर निकल गया।
19 अपनी पत्नी की ये बातें सुनकर, कि तेरे दास ने मुझ से ऐसा ऐसा काम किया, यूसुफ के स्वामी का कोप भड़का।

20 और यूसुफ के स्वामी ने उसको पकड़कर बन्दीगृह में।
21 पर यहोवा यूसुफ के संग संग रहा, और उस पर करूणा की, और बन्दीगृह के दरोगा के अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई।
22 सो बन्दीगृह के दरोगा ने उन सब बन्धुओं को, जो कारागार में थे, यूसुफ के हाथ में सौंप दिया; और जो जो काम वे वहां करते थे, वह उसी की आज्ञा से होता था।

6. उत्पत्ति 41 : 1 (*से* :), 14 (*से* :), 15, 16, 28-30 (*से 1st* ;), 33, 37-40

1 पूरे दो बरस के बीतने पर फिरौन ने यह स्वप्न देखा।
14 तब फिरौन ने यूसुफ को बुलवा भेजा। और वह झटपट बन्दीगृह से बाहर निकाला गया।
15 फिरौन ने यूसुफ से कहा, मैं ने एक स्वप्न देखा है, और उसके फल का बताने वाला कोई भी नहीं; और मैं ने तेरे विषय में सुना है, कि तू स्वप्न सुनते ही उसका फल बता सकता है।
16 यूसुफ ने फिरौन से कहा, मैं तो कुछ नहीं जानता: परमेश्वर ही फिरौन के लिये शुभ वचन देगा।
28 यह वही बात है, जो मैं फिरौन से कह चुका हूं, कि परमेश्वर जो काम किया चाहता है, उसे उसने फिरौन को दिखाया है।
29 सुन, सारे मिस्र देश में सात वर्ष तो बहुतायत की उपज के होंगे।
30 उनके पश्चात सात वर्ष अकाल के आयेंगे।
33 इसलिये अब फिरौन किसी समझदार और बुद्धिमान् पुरूष को ढूंढ़ करके उसे मिस्र देश पर प्रधानमंत्री ठहराए।
37 यह बात फिरौन और उसके सारे कर्मचारियों को अच्छी लगी।
38 सो फिरौन ने अपने कर्मचारियोंसे कहा, कि क्या हम को ऐसा पुरूष जैसा यह है, जिस में परमेश्वर का आत्मा रहता है, मिल सकता है?
39 फिर फिरौन ने यूसुफ से कहा, परमेश्वर ने जो तुझे इतना ज्ञान दिया है, कि तेरे तुल्य कोई समझदार और बुद्धिमान् नहीं;
40 इस कारण तू मेरे घर का अधिकारी होगा, और तेरी आज्ञा के अनुसार मेरी सारी प्रजा चलेगी, केवल राजगद्दी के विषय मैं तुझ से बड़ा ठहरूंगा।

7. उत्पत्ति 42 : 3, 7 (*से 1st* ,)

3 सो यूसुफ के दस भाई अन्न मोल लेने के लिये मिस्र को गए।
7 उन को देखकर यूसुफ ।

8. उत्पत्ति 45 : 4, 5

4 फिर यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, मेरे निकट आओ। यह सुनकर वे निकट गए। फिर उसने कहा, मैं
तुम्हारा भाई यूसुफ हूं, जिस को तुम ने मिस्र आनेहारों के हाथ बेच डाला था।
5 अब तुम लोग मत पछताओ, और तुम ने जो मुझे यहां बेच डाला, इस से उदास मत हो; क्योंकि परमेश्वर ने
तुम्हारे प्राणों को बचाने के लिये मुझे आगे से भेज दिया है।

9. 1 पतरस 2 : 19-23

19 क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुख उठाता हुआ क्लेश सहता है, तो यह सुहावना
है।
20 क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूंसे खाए और धीरज धरा, तो उस में क्या बड़ाई की बात है? पर यदि
भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है।
21 और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठा कर, तुम्हें एक आदर्श दे
गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो।
22 न तो उस ने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली।
23 वह गाली सुन कर गाली नहीं देता था, और दुख उठा कर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने
आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौपता था।

10. फिलिप्पियों 2 : 12, 13

12 सो हे मेरे प्यारो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए
पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते
जाओ।
13 क्योंकि परमेश्वर ही है, जिस न अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने
का प्रभाव डाला है।

11. रोमियो 8 : 28

28 और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को
उत्पन्न करती है; अर्थात उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 115: 15-16

आदमी: ईश्वर का आध्यात्मिक विचार, व्यक्तिगत, परिपूर्ण, शाश्वत।

2. 258: 13-15, 19-24

ईश्वर मनुष्य में अनंत विचार व्यक्त करता है जो हमेशा अपने आप को विकसित करता है, एक व्यापक आधार से ऊंचा और ऊंचा होता है।

अनंत सिद्धांत अनंत विचार और आध्यात्मिक व्यक्तित्व द्वारा परिलक्षित होता है, लेकिन तथाकथित इंद्रियों की सामग्री का सिद्धांत या उसके विचार का कोई संज्ञान नहीं है। मानव क्षमताएँ बढ़ जाती हैं और अनुपात में परिपूर्ण हो जाती हैं क्योंकि मानवता मनुष्य और ईश्वर की सच्ची अवधारणा को प्राप्त करती है।

3. 307: 25 (वह)-30

दिव्य मन मनुष्य की आत्मा है, और यह मनुष्य को सभी चीजों पर प्रभुत्व प्रदान करता है। मनुष्य को भौतिक आधार से नहीं बनाया गया था, न ही उन भौतिक कानूनों का पालन करने पर प्रतिबंध लगाया गया है जो आत्मा ने कभी नहीं बनाए; उनका प्रांत मन की उच्च विधि में आध्यात्मिक विधियों में है।

4. 90: 24-32

स्वयं के लिए प्रवेश यह है कि मनुष्य ईश्वर की अपनी समानता है जो मनुष्य को अनंत विचार के लिए स्वतंत्र करता है। यह विश्वास मृत्यु पर दरवाजा बंद कर देता है, और इसे अमरता की ओर विस्तृत करता है। आत्मा की समझ और मान्यता अंत में आनी चाहिए, और हम दिव्य सिद्धांत की आशंका के माध्यम से होने के रहस्यों को सुलझाने में हमारे समय में सुधार कर सकते हैं। वर्तमान में हम जानते हैं कि मनुष्य क्या नहीं है, लेकिन हम निश्चित रूप से यह जानते हैं जब मनुष्य भगवान को दर्शाता है।

5. 228 : 11-19

मनुष्य की दासता वैध नहीं है। जब मनुष्य अपनी स्वतंत्रता की विरासत में प्रवेश करेगा, तो उसका ईश्वर प्रदत्त भौतिक इंद्रियों पर आधिपत्य हो जाएगा। नश्वर किसी दिन सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम पर अपनी स्वतंत्रता का दावा करेंगे। तब वे दिव्य विज्ञान की समझ के माध्यम से अपने स्वयं के शरीर को नियंत्रित करेंगे। अपनी वर्तमान मान्यताओं को गिराते हुए, वे सद्भाव को आध्यात्मिक वास्तविकता के रूप में और भौतिक असत्य के रूप में कलह को पहचानेंगे।

6. 262 : 9-16

हम नश्वर विश्वास के उथलेपन में गोता लगाकर ईश्वर की रचना की प्रकृति और गुणवत्ता को थाह नहीं दे सकते। हमें जीवन में सत्य और भौतिकता को खोजने के अपने अथक स्पंदन को उलट देना चाहिए - और ईश्वर के अमर विचार के लिए नश्वर से ऊपर, भौतिक इंद्रियों की गवाही से ऊपर उठना होगा। ये स्पष्ट, उच्च विचार भगवान-जैसे मनुष्य को उसके अस्तित्व के पूर्ण केंद्र और सीमा तक पहुंचने के लिए प्रेरित करते हैं।

7. 517 : 30-4

दिव्य प्रेम अपने स्वयं के विचारों को आशीर्वाद देता है और उनकी शक्ति को प्रकट करने के लिए उन्हें गुणा, और करने का कारण बनता है। मिट्टी की खेती करने के लिए आदमी नहीं बनाया गया है। उसका जन्मसिद्ध अधिकार है, अधीनता नहीं। वह पृथ्वी और स्वर्ग में विश्वास का स्वामी है, - स्वयं अपने निर्माता के अधीन है। यह होने का विज्ञान है।

8. 444 : 2-6, 10-12

किसी तरह, जल्दी या बाद में, सभी को भौतिकता से श्रेष्ठ होना चाहिए, और दुख इस ऊंचाई में ईश्वरीय एजेंट है। "जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है," यह पवित्रशास्त्र का अधिनायक है।

जो लोग उस पर भरोसा करते हैं, उन्हें कदम से कदम पता होगा कि: "परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक।"

9. 22 : 11-17

"अपने स्वयं के उद्धार का काम करें," यह जीवन और प्रेम की मांग है, इस अंत के लिए भगवान आपके साथ काम करते हैं। "जब तक मैं न आऊं तब तक दृढ़ रहना!" अपने इनाम की प्रतीक्षा करें, और "अच्छा करने में थके नहीं। यदि आपके प्रयास भयभीत बाधाओं से घिरे हुए हैं, और आपको कोई वर्तमान इनाम नहीं मिलता है, तो गलती पर वापस न जाएं, और न ही दौड़ में सुस्त बनें।

10. 254 : 19 (वह) -23

...मानव स्वयं को प्रचारित करना चाहिए। यह कार्य ईश्वर हमें आज प्रेमपूर्वक स्वीकार करने के लिए, और इतनी तेजी से व्यावहारिक सामग्री को छोड़ने के लिए, और आध्यात्मिक कार्य करने के लिए कहता है जो बाहरी और वास्तविक को निर्धारित करता है।

11. 183 : 21-25

डिवाइन माइंड सही ढंग से मनुष्य की संपूर्ण आज्ञाकारिता, स्नेह और शक्ति की माँग करता है। किसी भी कम निष्ठा के लिए कोई आरक्षण नहीं किया जाता है। सत्य का पालन मनुष्य को शक्ति और सामर्थ्य देता है। त्रुटि के अधीन होने से शक्ति का नुकसान होता है।

12. 202 : 15-23

इस विज्ञान के बिना सब परिवर्तनशील है; लेकिन अमर मनुष्य, अपने ईश्वर के दिव्य सिद्धांत के अनुसार, न तो पाप करता है, न ही पीड़ित होता है, न ही मरता है। जब परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर आएगा, तो हमारी तीर्थयात्रा के दिन कम हो जाएंगे; क्योंकि सच्चा मार्ग मृत्यु के बदले जीवन की ओर ले जाता है, और सांसारिक अनुभव त्रुटि की सत्यता और सत्य की अनंत क्षमताओं को प्रकट करता है, जिसमें परमेश्वर मनुष्य को सारी पृथ्वी पर प्रभुत्व प्रदान करता है।

13. 571 : 15-19

हर समय और सभी परिस्थितियों में, अच्छाई के साथ बुराई को दूर करें। अपने आप को जानें, और ईश्वर ज्ञान और बुराई पर विजय के अवसर की आपूर्ति करेगा। प्यार की कशमकश में जकड़े, मानवीय घृणा आप तक नहीं पहुंच सकती।

14. 452 : 10-15

पुराने को उखाड़ते समय, आपको नए पर डालने से डरना नहीं चाहिए। आपका अग्रिम पाठ्यक्रम ईर्ष्या को भड़काने वाला हो सकता है, लेकिन यह सम्मान को भी आकर्षित करेगा। जब त्रुटि आपका सामना करती है, तो फटकार या स्पष्टीकरण को वापस नहीं लेता है जो त्रुटि को नष्ट कर देता है। जब तक इसे शुद्ध करने के प्रयास में अनैतिक माहौल में सांस न लें।

15. 261 : 4-7

धीरज, अच्छे और सच्चे विचार को दृढ़ता से पकड़ें, और आप अपने अनुभवों के अनुपात में इन्हें अपने अनुभव में लाएंगे।

16. 451 : 14-18

मनुष्य उस दिशा में चलता है जिस ओर वह देखता है, और जहां उसका खजाना है, वहां उसका दिल भी होगा। यदि हमारी आशाएँ और स्नेह आध्यात्मिक हैं, तो वे ऊपर से आते हैं, नीचे से नहीं, और अतीत की तरह वे आत्मा के फल का उत्पादन करते हैं।

17. 21 : 9-14

यदि शिष्य आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ रहा है, तो वह अंदर प्रवेश करने का प्रयास कर रहा है। वह भौतिक दृष्टि से लगातार दूर होता जाता है, और आत्मा की अपूर्ण चीजों की ओर देखता है यदि वह ईमानदार है, तो वह शुरू से ही सबसे अधिक लाभ में रहेगा, और जब तक वह खुशी के साथ अपना कोर्स पूरा नहीं कर लेता, तब तक वह हर दिन सही दिशा में थोड़ा-थोड़ा हासिल करेगा।

18. 453 : 6-8

सही और गलत, सत्य और त्रुटि, छात्रों के दिमाग में तब तक रहेगी, जब तक कि जीत अजेय सत्य के पक्ष में नहीं हो जाती।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6